सप्त व्यसन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

व्यसन का अर्थ है–बुराई या दुर्गुण। व्यसन में फंसकर मनुष्य अपने जीवन को नष्ट कर देता है। व्यसन लोगों को अपनी तरफ खींच लेता है। अच्छाई लोगों को अपनी तरफ उतनी शीघ्रता से नहीं आकर्षित करती जितनी शीघ्रता से बुराई मनुष्य को अपनी तरफ आकर्षित करती है। दुर्गुण अनेक हैं। महाभारत का युद्ध द्युत क्रीड़ा का परिणाम था। पहले राजाओं में द्युत क्रीड़ा का प्रचलन था। कौरवों और पाण्डवों में जब द्युत क्रीड़ा प्रारम्भ हुई तो कौरवों की तरफ से शकुनी पासा फेंक रहा था। शकुनी इस विद्या में पारंगत था। पाण्डवों के पक्ष से युधिष्ठिर पास फेंक रहे थे। युधिष्ठिर दाव पर दाव लगाते गये और सब कुछ हार गये यहां तक कि अपनी धर्मपत्नी और भाइयों को भी द्युत क्रीड़ा में हार गये, जिसका परिणाम महाभारत के युद्ध के रूप में सामने आया। इसमें कौरवों का तो सर्वनाश हो गया। समाज में खुलेआम जुआ का खेल होता है। कुछ लोग उसमें जीतते हैं और कुछ लोग उसमें पराजित होते हैं। इसकी आदत पड़ जाने पर जुआरी अपनी जमीन जायदाद को भी दाव पर लगाकर सब कुछ नष्ट करके बर्बाद हो जाता है। इसलिए व्यसन नहीं करना चाहिए।

चोरी बहुत बड़ा व्यसन है। इसका प्रारम्भ अपने घर से ही होता है। बच्चे अपने पिता के जेब से पैसा निकालकर ले जाते हैं और उसका अपव्यय करते हैं। धीरे–धीरे स्कूल में चोरी करना सीखते हैं। यदि इस पर अंकुश नहीं लगाया गया तो पास–पड़ोस, घर–मकान, दुकान में चोरी करते हुए डकैती करने लगते हैं और पुलिस के हत्थे चढ़ने पर जेल में पूरी जिन्दगी बीताते हैं। इस पर बचपन में ही घर वालों को नियन्त्रण रखना चाहिए। व्यभिचार भी बहुत बड़ा दुर्गुण है। हमारे देश में इस दुर्गुण पर नियन्त्रण करने के लिए विवाह की व्यवस्था की गयी है। विवाह का अर्थ है स्वदार संतोष। स्वादार संतोष सामाजिक मान्यता प्राप्त संस्कार है। यदि अपनी स्त्री को छोड़कर कोई परनारी पर आसक्त होता है और उसके साथ गलत सम्बन्ध

स्थापित करता है तो यह व्यभिचार की श्रेणी में आता है। यह कानूनन अपराध है। समाज में यह कार्य पहले छिपकर के किया जाता है। लोगों को यह भय रहता है कि कहीं कोई इस कृत्य को देख न लें। धीरे–धीरे लोग इस कार्य के आदी हो जाते हैं और खुलेआम इस व्यसन में पड़ जाते हैं। इससे उनका जीवन बर्बाद हो जाता है और अनेक प्रकार के शारीरिक रोग से वह रुग्ण हो जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि उसकी मृत्यु ही हो जाती है। बुराइयों की सीख कुसंगत से प्राप्त होती है। नशा धीरे–धीर शुरू किया जाता है। धीरे–धीरे उसकी प्रवृत्ति बढ़ती जाती है और एक दिन ऐसा आता है कि हम नशे के बिना रह नहीं सकते। नशे के चंगुल में फंसकर जीवन बर्बाद हो जाता है। मद्यपान की आदत बहुत बुरी है। शराब पीकर शराबी सड़क पर, नाली में अथवा जहां कहीं भी गिरे हुए दिखाई देते हैं। शराबी को अपनी पत्नी मॉ और बहन में कोई अन्तर नहीं दिखता। वह अनाप–शनाप बोलता रहता है। दूसरों को गाली देता है। ऐसे व्यक्ति समाज के लिए कलंक हैं। शिकार खेलना भी एक व्यसन है। शिकार करना भारत की प्राचीन परम्परा थी। प्राचीनकाल में राजा लोग शिकार पर जाया करते थे। यह उनके आनन्द के लिए होता था। महाराज दशरथ ने श्रवण कुमार को शिकार समझकर बाण से मारा था जिससे उनकी मृत्यु हो गयी। जब महाराज दशरथ ने यह देखा कि यह शिकार नहीं बल्कि मनुष्य है तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। परिणाम स्वरूप श्रवण कुमार के माता–पिता को श्राप दिया। जिससे तड़प–तड़पकर उनकी मृत्यु हुई।

निन्दा करना भी एक व्यसन है। कुछ लोगों की आदत होती है कि वे एक–दूसरे की चुगली करते रहते हैं। परस्पर लड़ाते रहते हैं। यह एक बुरी आदत है। इसमें उनका कोई लाभ हो या न हो किन्तु दूसरों की हानि होती है। सप्त व्यसनों के कारण समाज में बुराइयां फैलती हैं। आज लोगों में अनेक बीमारियां फैल रही है। भागदौड़ भरी जिन्दगी में शान्ति नहीं मिल रही है। मानव तनावग्रस्त है। तनाव से पीड़ित होने के कारण मानव की दुर्गति हो रही है। मानव क्लेशों से तप रहा है। मानव अप्राकृतिक हो गया है। प्राचीनकाल में मनुष्य के पास साधन नहीं थे, फिर भी वह संतुष्ट था और प्रसन्नतापूर्वक रहता था। आज व्यक्ति ने अपनी आवश्यकताएं इतनी बढ़ा लीं है कि उसकी पूर्ति करने में वह रातों–दिन लगा रहता है। इसी के कारण उसे कष्टानुभूति होती है।

आज समाज में असहनशीलता बढ़ रही है। व्यक्ति स्वकेन्द्रित और स्वार्थी हो गया है। अहंकार की भावना बढ़ रही है जिसके कारण कष्ट भी बढ़ रहा है। त्याग की भावना नष्ट होती जा रही है। मानव इतना स्वकेन्द्रित हो गया है कि वह केवल अपनी पत्नी और बच्चों को ही देखता है। प्राचीनकाल में परिवार में समविभाग होता था। किन्तु आज यह नहीं हो रहा है। पहले व्यक्ति प्रधान था वहां धन कोई महत्व नहीं रखता था, किन्तु आज धन प्रधान हो गया है व्यक्ति गौण हो गया है। इसलिए धन कमाने की प्रतिस्पर्धा बढ़ गयी है जिससे तनाव भी बढ़ रहा है। कष्टों को सहन करना, दुःखों को सहन करना, प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करना और परीषहों को सहन करना कष्ट सहिष्णुता है। व्यसन समाज या राष्ट्र को घुन की तरह नष्ट कर देता है। जिस समाज में व्यसन व्याप्त हो जाये वह समाज स्वयं ही मृत प्राय हो जाता है।